संसाधन की सुलभता → संसाधन की सुलभता भी मानव-सामाजिक और आर्थिक रूप से प्रभावित करती है जहाँ एक तरफ संसाधन की सुलभता किसी देश को आर्थिक रूप से ताकतवर बनाती है। वहीं दूसरी तरफ यह सामाजिक अस्थिरता का कारण भी बनती है। जैसे → इराक का युद्ध तेल के कुओं पर अधिकार के लिए हुआ था।

(2) मनुष्य तथा पर्यावरण → इसके अंतर्गत मानव के क्रियाकलापों का पर्यावरण पर दुष्प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। इन प्रभावों को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

- प्रत्यक्ष प्रभाव
- अप्रत्यक्ष प्रभाव

समय बीतने के साथ-साथ मानव और पर्यावरण के संबंध में जो बदलाव आए हैं या फिर कहा जाए जो नकारात्मक बदलाव आए हैं उन्हें चार भाग में विभाजित किया जाता है।

- आखेट एवं भोजन संग्रह काल
- पशुपालन एवं पशु चारण काल
- पौधपालन एवं कृषि काल
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं औद्योगिकरण काल

(1) आखेट एवं भोजन संग्रह काल → यह मानव और उसकी सभ्यता के विकास का प्रारम्भिक काल था। इसे प्रागैतिहासिक काल के नाम से भी जाना जाता है। इस काल में मानव, पर्यावरण और उनके अंतर्संबंध से जुड़ी बातें निम्नलिखित थी →

- इस काल में मानव भौतिक मानव के रूप में था।

- वह अन्य जीव-जन्तुओं की तरह प्रकृति पर पूर्णतः निर्भर था।
- मानव की आवश्यकताएं बहुत कम थी (सिर्फ भोजन एवं आवास)
- मानव भोजन के लिए फल-फूल तथा शिकार पर निर्भर था।
- वो अपने औजार पत्थर और पेड़ की टहनियों से बनाता था।

आग का आविष्कार से मनुष्य के व्यवहार में भारी परिवर्तन हुआ।

- वह भोजन पका कर खाने लगा।
- भोजन पकाने के लिए लकड़ी की आवश्यकता का उसे एहसास हुआ। लकड़ी की मांग पहले की अपेक्षा बढ़ गई फलस्वरूप उसे पेड़ों को काटने के लिए औजारों की आवश्यकता का एहसास हुआ।

* कभी भोजन पकाते समय आग फैल गई होगी जिससे डर कर उसने जानवरों को भागते देखा होगा।

- इस घटना से उसे दो अन्य चीजों की जानकारी हुई।